डॉ. साईनाथ नागनाथ गणशेटवार

कैलाश गौतम की 'गंगा' कविता में सामाजिक यथार्थ का चित्रण

भारत में बहने वाली गंगा सबसे पवित्र नदियों में से एक है । नदी आशा, विश्वास का प्रतीक है । इसकी पवित्रता के कारण इसकी पूजा की जाती है । हालांकि मानवजनित गतिविधि के कारण नदी का पानी लगातार प्रदूषित हो रहा है । क्योंकि, जिस गंगा को भारत में पवित्र स्थान या माँ का दर्जा दिया जाता है, उसी का आज दुर्व्यवस्था कर चुके हैं । नदियों के आस – पास के शहरों का अपशिष्ट (कलुषित) जल नदी को गंभीर रूप से प्रदूषित कर रहा है । देश के प्रमुख धार्मिक शहर वाराणसी की पहचान, गंगा के निर्मल जल पर संकट के बादल मंडरा रहे हैं । गंगा का जलस्तर इस तेजी से गिर रहा है कि विगत एक वर्ष के भीतर गंगा में ढाई फिट पानी घट गया है । जिन घाटों पर बैठकर कभी लोग गंगा के निर्मल जल में स्नान कर पापों का नाश किया करते थे उन घाटों से गंगा का पवित्र जल दूर हो गया है । गंगा के घटते जलस्तर से सभी परेशान हैं । गंगा नदी में ऑक्सीजन की मात्रा भी सामान्य से कम हो गई है । भारत के वैज्ञानिक और साहित्यकार कहते हैं कि गंगा को बचाओं और सुख, समृद्धि के साथ जियों । इस दुर्व्यवस्था के विद्रूपताओं एवं विसंगतियों का उत्तर कैलाश गौतम ने गंगा कविता में यथार्थ रूप से प्रस्तुत किया है ।

कैलाश गौतम आधुनिक कवियों में से एक माने जाते है । इसके साथ ही ठेठ कवि के रूप भी जाने जाते है । इन्होंने अपनी कविताओं के माध्यम से सामाजिक परिस्थितियों पर व्यंग्यात्मक कटाक्ष किया है । अपनी कविताओं में गाँव के गली से लेकर शहर की मौले तक के अनेक प्रश्नों को संवेदनाओं के साथ–साथ ग्रामीण जीवन शैली की उठापटक को एकदम अनोखे शैली में प्रस्तुत किया है । इनकी जनवादी सोच और ग्राम्य संस्कृति के व्यंग्य संवाहक के कारण लोग जादूई कवि के रूप में पुकारते है । जनता की पुकार को सच करते हुए कैलाश जी ने अपने विविध कविता ओं में समाज की गतिविधियों पर प्रकाश डालते हुए सच्छाई को सामने लाने का प्रयास किया है । उसमें से ही एक 'गंगा' कविता है ।

भारत की पवित्र गंगा आजकल बहुत उदास है । खुद अपने आप में जूझ रही है । उसे कुछ समझ नहीं आ रहा है कि इस जनता ने उसकी पवित्रता, मिठास और तीर्थजल को पूरी तरह से खत्म कर देने के कगार पर है । क्योंकि गंगा पहले अपनी स्वंतत्रता के साथ बहती थी । न उसे कोई रोक सकता था, न उसे कोई बाँध सकता था । लेकिन आजकल लोग अपना स्वार्थ के कारण खुद की उन्नति के लिए उस गंगा को दूषित करने पर तुले हैं । उसके मिठापन और पवित्र पानी को खेतों के फसलों के लिए, कंपनी के उद्योग के लिए, रेत के व्यापार के लिए विकास के नाम पर गंगा के प्रवाह में बाँध निर्माण करके अपने स्वार्थ की ओर मोढ़ रहे हैं । इस तरह के अलग–अलग स्थानों पर बाँधों का निर्माण और नहरों का निर्माण करके बहती गंगा को पूरी तरह से बंद करते हुए मैदान बना रहे हैं । कैलाश जी अपने गंगा कविता के माध्यम से जनता को सवाल करते है कि जब गंगा नहीं बहती तो गंगा में पानी रहेगा या सिर्फ रेत ही बचा रहेगा । गंगा में गंगा जल रहता था । उसे इसीलिए

भारतीय संस्कृति में पवित्रता का सम्मान मिला था । लेकिन उसे भी जनता अपने स्वार्थ और पैसों के लिए अपवित्र कर दिया है । इस लिए गंगा एक मछली के भाँति तडप रही है और सिर पी–पीट के रो रही है इस तरह कहते हुए लिखते है कि –

"गंगा की बात क्या करू गंगा उदास है।

वह जूझ रही खुद से और बदहवास है।

न अब रंगोरूप है न वो मिठास है,

गंगाजली को जल नहीं गंगा के पास है।

दौड़ा रहे हैं लोग इसे खेत–खेत में,

मछली की तरह स्वयं तड़पती है रेत में

बाँधों के जाल में कहीं नहरो के जाल में,

सिर पीट–पीट रो रही शहरों के जाल में।"1

उस पवित्र गंगा में अपने पापों का जल यानी शहर के गंदे नाले–पनालों को गंगा में छोड़ रहे हैं । गंगा के किनारे बसे हुए घाटी पर आकर लोग गंगा में पान खाकर थूक रहे हैं। चाय पीकर कुल्हड, भेल – पकोडी खाकर पत्ते के साथ–साथ अन्य विषकारी वस्तुओं को गंगा में बहा रहे हैं । आज आपको शहरों में अनेक जगह टिले जैसे कूड़े का बड़े–बड़े ढेर हैं । वह सिर्फ कचरे का ढेर नहीं अनेक रोगों का जमा हुआ भयंकर वायरस हैं । उसे भी गंगा के नदी में बहा रहे हैं । क्योंकि गंगा इस जनता से कुछ बोल नहीं सकती वह बिचारी असहाय है, लाचार है । प्राचीन काल से गंगा की पहचान भारत में पवित्र नदी के रूप में देखा जाता था, लेकिन आजकल वह कूड़े का कुंड़ी और पापों का गंदा सागर बन चुकी है ।

कवि कहता है कि गंगा के रहने से या खत्म होने से लोगों को क्या फर्क पड़ता है। लोग अपने आप में सब कुशल–मंगल हैं । गंगा यह सब होते हुए देखकर पूरी तरह से हैरान है । अपने हाल को खुद देखकर परेशान भी है । वह सोचती है कि जो पहले मैं पूरे पानी से भरी रहती थी, लेकिन वह पूरा पानी खाली होकर नदी से मैदान हो गया है । वह सोचती है कि पहले मैं इस देश की माँ थी, लेकिन आज मुझे लगता है कि इस देश की मेहमान बनकर रह गयी हूँ, वह भी कुछ दिनों की ।

कैसे–कैसे ज्ञानी पंडित लोग है इस समाज में शान–शौक के साथ रहते हैं, बड़े–बड़े विचार जनता के सामने रखते हैं लेकिन वे ही शान से घाट पर जाकर राख, हाँडी गंगा में बहाते हैं । जो भी खाते है वह बचा हुआ सब झूठा पत्तल में सब कुछ लपेटकर नदी में उछाल देते हैं । इसके साथ–साथ ही अपने बच्चों के कपड़े, गद्दे

आदि चींजे एवं गलियों का गंदा और अपने जूतों का गोबर भी इस पवित्र नदी में साफ करते नज़र आते हैं । इसी कारण गंगा पूरी तरह उदास है ।

कवि जनता से कहते हैं कि आप कितना भी गंदगी को फेंको गंगा में, वह कुछ नहीं कहेगी। क्योंकि बिचारी के पास बोलने के लिए मुँह नहीं है । आप उसे सीधी बहाइये या उलटा उसे कोई फर्ख नहीं पड़ता है । वह सब कुछ सहन करते हुए, अपने दर्द को झेलते हुए, अपनी जीवनयापन को चलाते हुए आगे बढ़ती है । वह सोचती है कि मैं जितना पवित्र थी उतना ही अपवित्र हो गई हूँ । क्योंकि सड़ा हुआ अखबार, कचरा, बदबुदार कीचड़, मरे हुए जानवर जैसे सियार लाश आदी गंगा में बहा रहे हैं । गंगा में लोगों की लाशों को भी जला–बहा रहे है। लेकिन वह कुछ बोलती नहीं पर उदास रहती है । गंगा के साथ–साथ हो रहे अत्याचार अन्याय को उजागर करते हुए आगे लिखते है गंगा किस तरह वह इस भूमि पर आयी है और उसे कौन लाया है । जब वह कैलाश से निकली तो किस तरह खुशी के साथ निकली और अनेक लोगों की समस्याओं को दूर कि है । लेकिन लोग उसके साथ किस तरह व्यवहार कर रहे है । जैसे –

"नागिन–सी–डोलती कहीं हिरनी–सी उछलती,

–आई है मेरे–गाँव–तक ये गिरती सम्हलती।

टीलों की प्यास मन से बुझाती चली गंगा,

पेड़ों की छाँह छाँह छहाती चली गंगा।

घर–घर का सारा पाप बहाती चली गंगा,

उजड़े हुए नगर को बसाती चली गंगा।" 2

इस समाज में गंगा अपना घर, द्वार, माता, पिता और पति के प्यार को छोड़कर बड़े शौक और खुशी से आयी थी । जिस तरह एक गाँव की लड़की ससुराल जाने से पहले क्या–क्या सपने देखती है उसी प्रकार गंगा भी भारतवर्ष में सपने लेकर आई थी । वह हिमालय से निकली तो इस बनावटी समाज की चमक को देखकर विस्मित हो गई थी । जब आयी थी उसके पवित्रता, गंगाजल, शुद्धता, मिठापन, संस्कार आदि से समाज में अपना नाम बनाई। उस श्रेष्ठता को सुनकर भगीरथ भी सम्मोहित हुआ था ।

कवि कहता है कि गंगा जब पहली बार आ रही थी उस समय नागिन की तरह डुलती हुई और हिरन की जैसे उछलती हुई मेरे गाँव पहुँची थी। वह कभी गिरती थी तो कभी गिरकर उठती थी और थककर बैठती थी थोड़ा साँस लेकर फिर आगे बढ़ती भी थी । वह एक देहात की लड़की सी थी। वह अपने साथ एक जादू की छडी लेकर सबके पापों को दूर करने आई थी । वह पूरी उत्साह और चंचलता के साथ गाँव में पहुँची । जब गाँव में पहुँची तो वह अव्यक्त और अस्पष्ट परन्तु मधुर गीत समान थी । कल–कल ध्वनि के साथ वह आगत

परिस्थिति, वातावरण, प्रकृति जानवर और इस समाज एवं जनता के साथ एक करार करके प्यार से स्थिरता अपनाई । गाँवों में स्थिरता अपनाते हुए अपने मन से टीलोकी प्यास बुझायी और पेड़ो की छाह को बढ़ायी । जीव जंतुओं को पानी पिलायी, लोगों के पापों को अपने में समेठ ली और अपने गंगाजल के मिठास को समाज को प्रदान किया । इसके साथ–साथ अनेक घरो का ढ़ेर सारा पाप, दुखों को अपने नदी के प्रवाह में बहाती हुई तितर–बितर हुई, इतना सारा करने के बाद भी बड़े–बड़े शहर को बसाने का काम भी किया । लेकिन समाज ने उसे क्या दिया? इसलिए गंगा आज समाज से उदास है ।

जब भगीरथ इक्ष्वाकुवंशीय सम्राट दिलीप के पुत्र थे, जिन्होंने घोर तपस्या से गंगा को पृथ्वी पर अवतरित किया, इसलिए इनके नाम पर गंगा को 'भागीरथी' भी कहा गया । भगीरथ उसे एक पवित्र जगह पे बैठा दिया । इस गंगा से कुन्ती की कर्ण का समस्या का हाल हुआ । केवट का जीवन ही धन्य हो गया । गंगा सिर्फ भीष्म की माँ नहीं पूरे देश वासियों की माँ है । गंगा से जनता मुक्ति एवं मोक्ष प्राप्त की आशा रखते हैं । काशी में हम इसको साक्षात् देख सकते हैं । गंगा केवल नदी न होकर भारत की शान और संस्कृति है । भारत में इस गंगा का पर्व त्यौहार मनाते हैं । वह पुण्य का केन्द्र है । इस देश का श्रृंगार है । फिर भी गंगा उदास है ।

जिससे भी गंगा मिलती थी आदर और सम्मान के साथ मिलती थी । वह हिमालय से नीचे उतर कर सागर में मिलने तक गौरव प्राप्त करती रही । इसलिए हर घर में उसकी पूजा और आदर किया जाता है । इसीलिए गंगा–माता का नाम भारत भर में चर्चित है ।

गंगा एक माँ है । माँ अपने बच्चों के साथ कभी भेदभाव नहीं करती है । उसी तरह यहाँ भी गंगा को कोई भेदभाव नहीं मालुम है, ना उसके पास कोई मनमुठाव है । वह कभी अंतर, फ़र्क, ऊँच–नीच, भला–बुरा, उचित–अनुचित देखी नहीं । जैसे मीराबाई के एक मनौती में आ गई और रैदास ने चाहा तो उसके आँगन में भी आकर वह दर्शन दे गई । वह गणिका का भी धोती को अपनायी और एक सर्व साधारण की भी अपनायी ।

समाज में लोग गंगा के भरोसे हर दिन पाप करते हैं और पाप करके गंगा में डुबकी लगाके अपना पाप भी धोते हैं । गंगा इन सारे पापों का बोझ उठाती है । कुछ लोग जीवन भर पाप करते हैं, गंगा को दूषित करके वही अंतिम समय में अपने पाप से मुक्ति–मोक्ष प्राप्त करने हेतु काशी में जाकर गंगा में विलीन हो जाते हैं ।

प्राचीन काल से काशी में गंगा की पूजा बड़ी धूम–धाम से होती है । हर दिन गंगा आरती, दीपदान, दूध और फूलों से पूजा समर्पित करते हैं । इसी पूजा एवं सम्मान के कारण काशी में गंगा सुबह–शाम शांति से बहती है ।

कवि कहता है कि गंगा शंकर के जठा में रहती है । उससे बहुत प्रेम करती है । लेकिन गंगा को शंकर से ज्यादा प्रेम पार्वती से है । इन दोनों में कभी कोई झगड़ा नहीं हुआ । बहुत अच्छी तरह से पार्वती के साथ रहते हुए रिश्ता निभाती है । यही है, गंगा की विशेषता । शिव के परिवार में परिवार की तरह और पानी में नाव

की तरह रहती है । गाँव में पार्वती के साथ अच्छी तरह रहते हुए, हर एक काम करती हुई अपना नाम कमाई है । पार्वती के घर में गंगा का राज है । गंगा के कारण ही उस घर का लाज है । गंगा हर समय हँसती हुए, महादेव को हर–हर पुकारते हुए आरती स्वीकारती है । अस्सी घाट को निहारती है और जल उसे देखता है । कवि कहते है कि सच में गंगा तुम बड़ी उदार मन की है । मुर्दे को भी तारती है । फिर भी गंगा उदास है । इतना उदार मन की रहते हुए भी आज गंगा उदास क्यो है इसका उल्लेख करते हुए वे कहते है कि –

"न पीने के लिये है न नहाने के लिये है,

गंगा भी आज खाने कमाने के लिये है।

हर घाट यात्री को फँसाने के लिये है,

बोरे में बँधी लाश छिपाने के लिये है।

गंगा में आज नाव दिखाने के लिये है,

हथियार और दारू बनाने के लिये है।"3

इतना पवित्र नदी गंगा आज की परिस्थिति में लोगों के लिए न पीने के लिए न नहाने के लिए बचा है । सब प्रदूषित हो गई और गंगा के पानी से लोग बड़े – बड़े उद्योग करते है । गंगा के नाम पर यात्रियों को लुटाने का काम भी करते है । अपना जीवनयापन भी चलाते हैं । लोग गंगा में सिर्फ दूषित पानी ही नहीं छोड़ते, इसके साथ बहुत सारे गलत काम भी करते हैं । गंगा समाज में गलत काम करने वाले लोगों का एक अड्डा बना हुआ है । गंगा नदी में आज कल नावों में कई तरह के गलत व्यवहार चालू हो गया है । जैसे हथियार और दारू बनाना, नशे के अड्डे का निर्माण हो रहा है । नौका विहार में काले धंदे, काला बाजार चल रहे हैं ।

"जो–कुछ–भी–आज–हो–रहा–गंगा–के–साथ–है,

क्या–आप–को पता नहीं कि किसका हाथ है।

देखें तो आज क्या हुआ गंगा का हाल है,

रहना मुहाल इसका जीना मुहाल है।

गंगा के पास दर्द है आवाज़ नहीं है,

मुँह खोलने का कुल में रिवाज़ नहीं है।"4

कवि यहाँ जनता से सवाल पूछते हुए कहते है कि इन सारे काले कारनामों के पीछे कौन है? जो कुछ भी गंगा के साथ हो रहा है इसका जिम्मेदार कौन है? आपको पता नहीं? इससे पता चलता है गंगा उदास क्यों है, गंगा का इस समाज के साथ रहना, जीना मुश्किल हो गया है । इतना सारा अन्याय होने के बाद भी गंगा

आवाज नहीं उठाती है। वह सिर्फ दर्द को छुपाती रहती है । क्योंकि उसके पास संस्कार है, वह मुँह खोलना नहीं चाहती है । लेकिन जनता को समझना चाहिए कि गंगा का प्रकोप देखने से पहले ही सब को आपने आप सुधारना चाहिए ।

"गंगा नहीं रहेगी यही हाल रहा तो,

कब तक यहाँ बहेगी यही हाल रहा तो

अब लीजिये संकल्प ये बीड़ा उठाइये,

गंगा पर आँच आ रही गंगा बचाइये।"5

जनता नहीं सुधरेगी और इस तरह हर दिन चलते रहने से गंगा एक न एक दिन अपना भयंकर रूप धारण करके सभी को मिठाएगी । और कितने दिन गंगा जनता को सहन करेगी? गंगा भविष्य में रहेगी या नहीं? यह खतरा पूरी तरह से मंडरा रहा है । अभी तो सुधर जाइये और सभी मिलकर संकल्प उठाइए कि हम सब मिलकर गंगा को बचाएंगे । गंगा पर आँच तक नहीं आने देंगे । कृपया गंगा को बचाओं और आप भी स्वस्थ रहो । गंगा हमारी परंपरा है, हमारी पुर्वजों की देन है । गंगा हमारी संस्कृति है । गंगा ही इस दुनिया में एक पवित्र स्थान है । गंगा के कारण ही आज भारत की शान है । भारत के पवित्र स्थान हरिद्वार, काशी, प्रयाग है । गंगा ही हमारे घर का उजाला है, हमारी शक्ति है । गंगा ही हमारी संस्कृति की सुहाग है । कृपया गंगा को बचाइये, बचाइये । इस तरह गंगा के साथ हो रहे अन्याय और अत्याचार को पूरी तरह से यथार्थ रूप में जनता के सामने रखा है ।

आधार ग्रंथ सुची –

1. 'गंगा' कविता, कैलाश गौतम, लोकभारती प्रकाशन इलाहाबाद प्र सं 12
2. 'गंगा' कविता, कैलाश गौतम, लोकभारती प्रकाशन इलाहाबाद प्र सं 13
3. 'गंगा' कविता, कैलाश गौतम, लोकभारती प्रकाशन इलाहाबाद प्र सं 13
4. 'गंगा' कविता, कैलाश गौतम, लोकभारती प्रकाशन इलाहाबाद प्र सं 14
5. 'गंगा' कविता कैलाश गौतम, लोकभारती प्रकाशन इलाहाबाद प्र सं 15
6. वाणिज्य पाहुड, श्रीधर पी. डी, इनफिनेट लर्निंग सल्यूशन्स प्रकाशन बेंगलुरू – पृ. सं 85

सहायक प्राध्यापक – हिन्दी विभाग, क्रिस्तु जयंती महाविद्यालय (स्वायत्त) बेंगलूरू, कर्नाटक – 560077
G-mail: ganshetwar@kristujayanti.com